बुद्धत्व-सिद्धान्त तथा पुरुष

अरुण कुमार उपाध्याय, आइ.पी.एस., एम.एस.सी (गणित), ए.आइ.एफ.सी.
सी/४७, पलासपल्ली, भुबनेश्वर-७५१०२०
(मो) ०९४३७०३४१७२
arunupadhyay30@yahoo.in,

१. भूमिका-सिद्धार्थ बुद्ध को मुख्य बुद्ध माना गया है, जो सूर्यवंश में महाभारत के बृहद्बल के २४ पीढ़ी बाद हुये थे। सूर्य वंश का आरम्भ वैवस्वत मनु (१३९०२ ईसा पूर्व) से हुआ, जो विवस्वान् के पुत्र थे। विवस्वान् ने सौरमण्डल के ग्रह-गणित पर आधारित चैत्र मास से वर्ष का आरम्भ किया, जो उनके नाम से सूर्यसिद्धान्त में वर्णित है। प्रायः १०००० ईसा पूर्व में ५०० वर्ष के लिये जल-प्रलय हुआ था। उसके बाद इस वंश के इक्ष्वाकु का शासन १-१०-८५७६ ईसा पूर्व में आरम्भ हुआ, जो उस वर्ष चैत्र मास का प्रथम दिन था। इसी वंश में राम हुए जिनकी ३५ वीं पीढ़ी में महाभारत कालीन बृहद्बल था। महाभारत के आद सिद्धार्थ काल में बौद्ध धर्म का राजनीतिक तथा सामाजिक विकास हुआ, अतः उनको ही बुद्ध माना जाता है। ज्ञान प्राप्ति के बाद बे बुद्ध हुये, पर वे गौतम कब हुये, इसका उल्लेख कहीं नहीं है। कारण यह है कि गौतम प्रायः ५ वीं शताब्दी ईसा पूर्व में थे, पर दोनों को एक मान लिया जाता है जो सही नहीं है। केवल मौर्य अशोक के सारनाथ शिलालेख में ही सिद्धार्थ के अतिरिक्त ४ बुद्धों का वर्णन है। इसके बाद भी हम सभी को गौतम बुद्ध मानते हैं, जो २ व्यक्ति थे।

बौद्ध धर्म शाब्दिक तर्क की पद्धति का अनुसरण करता है। यह बुद्धि-वाद के रूप में जब से भाषा प्रचलित है, तभी से पूरे विश्व में प्रचलित था। गीता में इसे बुद्धि-योग कहा गया जो जो निष्ठा के २ मार्गों-योगियों के कर्म-मार्ग तथा सांख्यों के ज्ञान-मार्ग का समन्वय मार्ग है। एक अन्य मार्ग भक्ति है जो विश्व के रचयिता तथा रचना में विभाजन (भक्ति = भाग) के बाद दोनों को जोड़ने का साधन है। यह सभी साहना तथा मार्गों की अन्तिम परिणति है। समन्वय को ही सिद्धार्थ ने मध्यम-मार्ग कहा।

२. दर्शन- बौद्ध दर्शन को वैनाशिक कहा गया है क्योंकि यह प्रत्यक्ष के अनुसार निर्णय करता है। सभी चीजों का बाह्य स्वरूप नाशवान या क्षर है, अतः यह वैनाशिक है। क्षरः सर्वाणि भूतानि कूटस्थोऽक्षर उच्यते (गीता १५/१६)। यह प्रत्यक्ष (वास्तविक अनुभव) तथा तर्क पर आधारित है। सभी भाषाओं में वाक्य रचना भी तर्क पर आधारित है, अतः भाषा के जन्म के साथ ही न्याय दर्शन या तर्क का जन्म हो गया। यथा मीमांसा सूत्र में-वेदांश्चैके संनिकर्ष पुरुषाख्याः (१/१/२७) अनित्यदर्शनाच्च । (२८) उक्तं तु शब्दपूर्वत्त्वम् (२९) आख्याः प्रवचनात् । (३०) परं तु श्रुति सामान्यमात्रम् (३१) कृते वा विनियोगः स्यात्, (३२) कर्मणः सम्बन्धात् = वेद प्रायः पौरुषेय हैं, क्योंकि यह अनित्य के दर्शन पर भी आधारित है (वैनाशिक दर्शन)। पहले शब्द हो तभी कोई उक्ति हो सकती है। शिक्षा मनुष्य के प्रवचन द्वारा ही है। तात्कालिक अनुभव को श्रुति में सामान्य या व्यापक किया जाता है (यह वैनाशिक तुलना में वेद की विशेषता है)। कृति (कर्म, घटना) का विनियोग (प्रयोग) दूसरे कर्मों की समानता से ज्ञात होता है।

न्याय दर्शन को तथा इसके सूत्रकार को गौतम इसलिये कहा गया है, क्योंकि यह मूल वाक् (गौ) को तम (कुछ भाग लुप्त) कर देता है। वाणी के ४ पदों में परा (विचार का स्रोत), पश्यन्ती (अलग रूप में स्पष्ट), मध्यमा (तर्क संगत रूप), वैखरी (कथन या लेखन द्वारा व्यक्त)। ३ पद मस्तिष्क गुहा के भीतर हैं तथा शुद्ध हैं अतः गौ (ग तीसरा व्यञ्जन है) या गौरी वाक् है। व्यक्त शब्द अपनी अज्ञानता, भाषा की सीमा, तथा अपने उद्देश्य के अनुसार बदल जाता थै। मूल अर्थ का अंश लुप्त होने से यह तम है। गौ तथा तम का सम्बन्ध गौतम या न्याय दर्शन है। न्यायालय में इसी का प्रयोग है अतः कहते हैं कि यहां सफेद को काला या काले को सफेद करते हैं।

चत्वारि वाक् परिमिता पदानि तानि विदुर्ब्राह्मणा ये मनीषिणः।
गुहा त्रीणि निहिता नेङ्गयन्ति तुरीयं वाचो मनुष्या वदन्ति॥ (ऋग्वेद १/१६४/४५)

परायामङ्कुरीभूय पश्यन्त्यां द्विदलीकृता ॥१८॥
मध्यमायां मुकुलिता वैखर्या विकसीकृता ॥ (योगकुण्डली उपनिषद् ३/१८, १९)
अक्षरं परमो नादः शब्दब्रह्मेति कथ्यते। मूलाधारगता शक्तिः स्वाधारा बिन्दुरूपिणी॥२॥
तस्यामुत्पद्यते नादः सूक्ष्मबीजादिवाङ्कुरः। तां पश्यन्तीं विदुर्विश्वं यया पश्यन्ति योगिनः॥३॥
हृदये व्यज्यते घोषो गर्जत्पर्जन्यसंनिभः। तत्र स्थिता सुरेशान मध्यमेत्यभिधीयते॥४॥
प्राणेन च स्वराख्येन प्रथिता वैखरी पुनः। शाखापल्लवरूपेण ताल्वादिस्थानघट्टनात्॥५॥ (योगशिखोपनिषद् ३/२-५)
४ स्तरों के व्यक्तियों के लिये बौद्ध दर्शन के ४ रूप हैं-
(१) माध्यमिक (मध्यम मार्ग)- इसे शून्य-वाद भी कहते हैं, क्योंकि यह विश्व का पूर्ण योग शून्य मानता है। यह कणाद के वैशेषिक दर्शन के जैसा है।
(२) विज्ञानास्ति (विज्ञान पर आधारित)- इस मत के अनुसार विश्व का निर्माण बुद्धि या चेतना के द्वारा हुआ है। विश्व के चेतन तत्त्व को पुरुष सूक्त या सांख्य दर्शन में पुरुष कहा गया है। यह शाब्दिक तर्क तथा सांख्य का समन्वय है।
(३) योगाचार-बाहरी जगत् मन की कल्पना है। मन के नियन्त्रण का मार्ग योग है जिसके सूत्र पतञ्जलि ने लिखे हैं। इस मार्ग पर चलना योगाचार है।
(४) वैभाषिक- यह विभाषा या विकल्प को मानता है कि बाह्य तथा भीतरी दोनों विश्वों का अस्तित्व है। यह पूर्व-मीमांसा (जैमिनि सूत्र) तथा उत्तर-मीमांसा (बादरायण व्यास का ब्रह्म-सूत्र) का समन्वय है।
४ प्रकार के पुरुष (व्यक्ति, वस्तु, या विश्व) हैं- १. क्षर (नाशवान् बाहरी रूप), २. अक्षर (क्रिया रूप में परिचय जो दीखता नहीं है), ३. अव्यय (बाह्य विश्व का अंश या परिवर्तनों का क्रम), ४. परात्पर (विश्व का मूल रूप जिसमें कोई भेद नहीं है)। इनके अनुरूप ४ प्रकार के काल हैं- १. नित्य काल, जो सदा लोकों का क्षरण करता है, अतः इसका अर्थ मृत्यु भी है। २. जन्य काल-यह यज्ञ चक्र का काल है जिसमें जनन या उत्पादन होता है। इसके द्वारा समय की माप या गणना होती है। ३. अक्षय काल-भौतिक विज्ञान के ५ प्रकार के संरक्षण सिद्धान्तों के अनुसार पूर्ण संहति में कोई परिवर्तन नहीं होता। ४. परात्पर काल-अति सूक्ष्म या विराट् रूप में अनुभव से परे है।
इसी प्रकार मनुष्य के विकास के भी ४ स्तर हैं जिसकी पूर्णता को बुद्ध कहा गया है-
१. श्रावक-सामान्य मनुष्य जो अपनी उन्नति की इच्छा रखता है।
२. बोधिसत्व-विकास की उच्च स्थिति।
३. प्रत्येक बुद्ध-विकसित स्तर, मनुष्य रूप में बुद्ध।
४. सम्यक् बुद्ध-क्षण मात्र के लिये ज्ञान की उच्चतम अवस्था।
बौद्ध ग्रन्थों के अनुसार भी सम्यक् बुद्ध उच्चतम स्थिति होने के कारण एक ही हो सकता है। प्रत्येक बुद्ध मनुष्य रूप में दीखता है। ७ लोक, २४ प्रकृति या बुद्धि के २८ अशक्ति के अनुसार ७, २४, या २८ मनुष्य बुद्ध हैं। इन संख्याओं के आधार हैं-
अग्नि की निगलने वाली जिह्वा ७ हैं जिनसे ७ लोक, ७ प्राण आदि हुये है निकालने वाली जिह्वा भी ७ हैं। अतः कुल जिह्वा १४ (मनवः) हैं। इनका अर्थ मन की वृत्ति भी है, अतः बुद्ध (या बुद्धि) के ७ रूप होंगे।
अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वेनो देवा अवसा गमन्निह। (ऋग्वेद १/९८/७, यजुर्वेद २५/२०)
काली कराली च मनोजवा च सुलोहिता या च सुधूम्रवर्णा।
स्फुलिङ्गिनी विश्वरुची च देवी लेलायमाना इति सप्त जिह्वाः॥ (मुण्डकोपनिषद् १/२/४)
सप्तप्राणा प्रभवन्ति तस्मात्, सप्तार्चिषः समिधः सप्त होमाः।
सप्त इमे लोका येषु चरन्ति प्राणा गुहाशया निहिताः सप्त सप्त। (मुण्डकोपनिषद् २/१/८)
शब्दों की ७ संस्था हैं (प्रसंग या विषय के अनुसार उनके अर्थ बदलते हैं)।
सर्वेषां तु स नामानि कर्माणि च पृथक् पृथक्। वेद शब्देभ्य एवादौ पृथक् संस्थाश्च निर्ममे॥ (मनु स्मृति १/२१)
यास्सप्त संस्था या एवैतास्सप्त होत्राः प्राचीर्वषट् कुर्वन्ति ता एव ताः। (जैमिनीय ब्राह्मण उपनिषद् १/२१/४)

छन्दांसि वाऽअस्य सप्त धाम प्रियाणि । सप्त योनीरिति चितिरेतदाह । (शतपथ ब्राह्मण ९/२/३/४४, यजु १७/७९)
शब्दों के ४ स्रोत हैं-नाम, आख्यात (परिभाषा), उपसर्ग, निपात (प्रचलन)। प्रत्येक में ७ संस्था होने से इनके ४ x ७ = २८ रूप होंगे। ये बुद्धि के ही विकल्प रूप हैं, अतः शब्द भी २८ हैं।
इतीमानि चत्वारि पदजातान्यनुक्रान्तानि। नामाख्याते चोपसर्ग-निपाताश्च (निरुक्त १/१२)
सांख्य दर्शन में बुद्धि की २८ अशक्तिया हैं, अतः बुद्धि या बुद्ध भी २८ होंगे-
अष्टाविंशतिधा अशक्तिः (तत्त्व-समास, १३) अशक्तिरष्टाविंशतिधा (सांख्य सूत्र ३/२८)
एकादशेन्द्रियवधाः सह बुद्धेर्विपर्ययात्तुष्टि सिद्धीनाम् (सांख्य कारिका ४९)
२४ अवतारों का गणित भास्कराचार्य की लीलावती में दिया है। विष्णु के ४ हाथों में ४ आयुध रखने के २४ प्रकार हैं (४x३x२x१= २४)। प्रथम आयुध ४ हाथों में ४ प्रकार से रखा जा सकता है। उसके बाद ३ हाथ खाली बचेंगे जिनमें दूसरा आयुध ३ प्रकार से तथा तीसरा २ प्रकार से रख सकते हैं। प्रकृति के २४ तत्त्वों का भी एक गणित है। मूल प्रकृति के ३ गुणों से २³ = ८ प्रकार की प्रकृति हो सकती है। इनमें तम द्वारा कोई कार्य नहीं होता, सत्त्व, रज द्वारा ८+८ =१६ प्रकार की विकृति होती है। अतः ८+१६ = २४ प्रकृति के तत्त्व हुये। अतः विष्णु के २४ अवतार, २४ जैन तीर्थंकर या २४ बुद्ध हो सकते हैं। मनुष्य रूप में इनकी गणना उनके गुण-कार्य के आधार पर है।

३. बुद्धों के उल्लेख या निन्दा-यह माना जाता है कि एक ही बुद्ध हुये थे तथा उनकी निन्दा के लिये भागवत आदि पन्थों ने अपने शास्त्र लिखे। बुद्धि का प्रयोग जब सामाजिक व्यवस्था के विरुद्ध अपने स्वार्थ के लिये किया जाता है तब बौद्ध (बुद्धिवादी) या तथागत (जैसा मौका आया वैसा करने वाला) में तथा चोर में कोई अन्तर नहीं है-वह भी मौके का लाभ उठाकर दूसरे की सम्पति लेता है। राम वनवास के बाद भरत उनको बुलाने गये थे तो जाबालि ने बौद्धमत के अनुसार राम द्वारा राज्य रहण करने का औचित्य कहा। इस पर राम ने इस मत को चौर मत कहा है-
यथा हि चोरः स तथा हि बुद्धः तथागतं नास्तिकमत्र विद्धि।
तस्माद्धि यः शक्यतमः प्रजानां स नास्तिके नाभिमुखो बुधः स्यात्॥
(वाल्मीकि रामायण, अयोध्या काण्ड, अध्याय, १०९/३४)
यहां, शक्यतम = मौके का यथा सम्भव लाभ लेने वाला, बुधः = चालबाज।
कई लोग इस उदाहरण से सिद्ध करते हैं कि वाल्मीकि रामायण बुद्ध के बाद का है, पर सभी बौद्ध ग्रन्थों में कई बुद्धों का उल्लेख है। बुद्धवंश में २८ बुद्धों की सूची के बाद सिद्धार्थ बुद्ध की प्रशंसा की है कि उन्होंने अपने उपदेश लिखित रूप में रखे अतः वे सुरक्षित रहे-
अतीत बुद्धानं जिनानं देसितं। निकीलितं बुद्ध परम्परागतं।
पुब्बे निवासा निगताय बुद्धिया। पकासमी लोकहितं सदेवके॥
अन्य ४ बुद्ध थे-विपश्यि, शिखि, विश्वभू, तिष्य-जिनकी शिक्षा लिखित उपदेश के अभाव में नष्ट हो गयी।
अश्वघोष के बुद्ध चरित (२३/४३,४४) में भी कई बुद्धों का उल्लेख है। यह पुस्तक पिछले १०० वर्षों से अधिकांश विश्वविद्यालयों की पाठ्य पुस्तक है, तथापि अंग्रेजी आज्ञा-पालन के कारण केवल सिद्धार्थ को बुद्ध मानते हैं-
अन्ये ये चापि सम्बुद्धा लोकं विद्योत्यधीत्विषा। दीप इव गतस्नेह निर्वाणं समुपागताः॥
भविष्यन्ति च ये बुद्धा भविष्यन्ति तपस्विनः। ज्वलित्वाऽन्तं प्रयास्यन्ति दग्धेन्धन कृशानुवत्॥
चीनी यात्री फा-हियान ने ४ बुद्धों के जन्म स्थान का वर्णन किया है-क्रकुच्छन्द बुद्ध श्रावस्ती से १०० कि.मी दक्षिण-पश्चिम, कनकमुनि श्रावस्ती से ८ कि.मी. उत्तर तथा कश्यप बुद्ध (द्वितीय कश्यप) श्रावस्ती से १५ कि.मी. पश्चिम टण्डवा ग्राम में हुये थे। इनके पीठ हैं-चम्पा (भागलपुर, बिहार), साकेत (अयोध्या), सारनाथ (वाराणसी के निकट)। सारनाथ के पास निगलिहवा शिलालेख में अशोक ने लिखा है कि अपने शासन के १४वें वर्ष में उसने कोणगमन (कनकमुनि) के स्तूप (सारनाथ में) को दुगुना कर दिया तथा पुनः २० वें वर्ष में वहां गया।
इसी प्रकार शुद्धोदन पुत्र सिद्धार्थ को भी माया मोह का स्वरूप कहा गया है-
माया मोहस्वरूपोऽसौ शुद्धोदन सुतोऽभवत्। (अग्नि पुराण १६/२)

बौद्ध ग्रन्थों में भी बुद्ध को विष्णु या भगवान् का अवतार नहीं कहा गया है। जातक कथा के अनुसार १०० जन्मों में उनकी क्रमशः उन्नति का वर्णन है। यदि १०० जन्मों का वर्णन है तो यह आत्मा का ही हो सकता है, शरीर का नहीं। किन्तु प्रत्यक्ष प्रमाण या शाब्दिक तर्क द्वारा आत्मा के विषय में नहीं जाना जा सकता है, अतः बुद्ध ने इसकी चर्चा नहीं की है। पर इसका विरोध भी नहीं किया। कृषि, गोरक्ष, वाणिज्य आदि कामों में आत्मा की चर्चा की कोई जरूरत नहीं है, इसका यह अर्थ नहीं है कि ऐसे व्यक्ति नास्तिक हैं।

महाभारत, शान्ति पर्व अध्याय १२४ में प्रह्लाद द्वारा इन्द्र को शील का उपदेश कश्यप बुद्ध की शिक्षा पर आधारित है। शील शब्द का प्रयोग सिद्धार्थ बुद्ध ने प्रायः किया है। महाभारत कालीन बुद्ध के उपदेश शान्ति पर्व अध्याय ३०७-३०८ में हैं जो वसिष्ठ द्वारा करालजनक को शिक्षा के रूप में हैं। इसमें बुद्धत्व के ४ स्तरों के नाम हैं-अबुद्ध, अप्रतिबुद्ध, बुध्यमान, शुद्ध (या विशुद्ध) बुद्ध।

४. युग-चक्र-भारत में ७ योजन, ७ युग तथा ९ काल मानों का वर्नन है। योजन तथा युग युजिर् धातु से निष्पन्न हैं तथा ७ लोकों के अनुसार ये ७ होते हैं-

सप्त युञ्जन्ति रथमेकचक्रमेको अश्वो वहति सप्तनामा (ऋक्, १/१६४/२) –अस्यवामीय सूक्त

आधुनिक भौतिक विज्ञान में मीटर की ४ परिभाषायें, नौटिकल मील, फुट, प्रकाश वर्ष, ज्योतिषीय माप, तथा परसेक का व्यवहार होता है।

इसी प्रकार ७ युग हैं-जिनमें १ प्रकार का युग मनुष्य जीवन का भाग है-४ से १९ वर्ष तक के। ज्योतिषीय युग बहुत बड़ा है-४३,२०,००० वर्षों का। बाकी ५ युगों का प्रयोग ऐतिहासिक काल के निर्धारण में होता है। पञ्चसम्वत्सरमयं युगं-का अर्थ है कि ५ प्रकार के सम्वत्सरों से युग का पता चलता है। सभी को ज्योतिषीय युग मानने से भ्रम तथा भूल होती है। इसी प्रकार ५ प्रकार से दिन का निर्धारण होने से तिथि-पत्रिका को पञ्चाङ्ग कह्ते हैं-तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण।

मुख्य ऐतिहासिक परिवर्तन जल-प्रलय के क्रम में हैं। जब उत्तरी गोलार्ध में हिम अधिक होता है तो सभ्यता का केन्द्र विषुवत रेखा के निकट होता है। जैसे लंका में रावण, उत्तर अफ्रीका में हिरण्यकशिपु आदि। हिम कम होने पर शक्ति केन्द्र ४०-६० अंश उत्तर चला जाता है जैसा अभी है। इसका मुख्य कारण है पृथ्वी के अक्ष का २६००० वर्षों में शङ्कु आकार में भ्रमण । उत्तरी ध्रुव पृथ्वी कक्षा के ऊपरी विन्दु या नाक (कदम्ब) के चारों ओर प्रायः २४° अंश की दूरी पर परिक्रमा करता है। इस भ्रमण मार्ग को विष्णु पुराण २/८ में शिशुमार चक्र कहा गया है। ब्रह्माण्ड पुराण में इसे २६००० वर्ष का मन्वन्तर कहा गया है जिसमें ३६० (या ३६५.२५) वर्ष के ७१ युग होते हैं। हिम-चक्र का एक और कारण है-पृथ्वी कक्षा का दूरतम विन्दु-मन्दोच्च, जहां गति सबसे मन्द होती है। पारम्परिक भौतिक विज्ञान के अनुसार इसकी दिशा स्थिर है, पर सापेक्षवाद के अनुसार इसकी चक्र गति होती है। २ कारणों से उत्तरी गोलार्ध में गर्मी होती है-जब इसकी दिशा सूर्य की तरफ हो, तथा पृथ्वी मन्दोच्च के विपरीत सूर्य के सबसे निकट हो। इस समय जल-प्रलय होगा। इसके विपरीत जब पृथ्वी मन्दोच्च पर हो तथा उसी समय उत्तरी ध्रुव सूर्य के विपरीत दिशा में हो तो हिमयुग होता है। अतः हिम-युग का चक्र १ लाख वर्षों के मन्दोच्च चक्र तथा विपरीत दिशा में उत्तरी ध्रुव के २६००० वर्ष चक्र के मिलन से होता है। इन दोनों चक्रों का संयुक्त चक्र २१६०० वर्षों में होगा, जो जल-प्रलय का चक्र है-

१/२१६०० = १/१००००० + १/२६०००.

१९२३ ईस्वी में चेकोस्लोवाकिया के वैज्ञानिक मिलांकोविच ने इस गणना के आधार पर २१६०० वर्षों का हिमयुग या जल प्रलय का चक्र बताया था। किन्तु पिछले २ लाख वर्षों में वास्तविक चक्र प्रायः २४००० वर्षों का है, जो भारत में अयनाब्द या कल्पाब्द (ऐतिहासिक) कहा गया है। इसमें १२-१२००० वर्षों के २ भाग होते हैं। पहले अवसर्पिणी होता है जिसमें सत्य, त्रेता, द्वापर, कलि ४८००, ३६००, २४००, १२०० वर्षों के हैं। उसके बाद कलि युग से आरम्भ होकर विपरीत क्रम से युग आते हैं। सभी पुराणों में १२००० दिव्य वर्षों का युग-चक्र दिया है। ज्योतिष में दिव्य वर्ष

३६० सौर वर्षों का है। पर इतिहास में सौर वर्ष को ही दिव्य वर्ष कहा गया है। इस मान से सप्तर्षि वत्सर २७०० दिव्य वर्ष या ३०३० मानुष वर्ष का है। यहां मानुष वर्ष ३२७ दिनों का है जिसमें चन्द्रमा पृथ्वी की १२ परिक्रमा करता है। चान्द्र वर्ष सूर्य तुलना में १२ परिक्रमा या प्रायः १३ परिक्रमा का ३५४ दिनों का है। २४००० वर्ष के युग-चक्र की गणना के लिये भारतीय ज्योतिष में ध्रुव गति के साथ मन्दोच्च का ३,१२,००० वर्षों का दीर्घकालिक चक्र जोड़ा गया है-

१/२४००० = १/२६००० + १/३१२०००

२६००० वर्ष के बदले २४००० वर्ष का चक्र लेने से २४००० वर्षों के चक्र में बीज-संस्कार (ग्रह गति में संशोधन) करना पड़ता है, जिसे सिद्धान्त शिरोमणि में आगम प्रमाणित या अज्ञात कहा गया है। इसमें युग खण्ड ३६० वर्षों के हैं, त्रेता में ऐसे १० खण्ड होंगे। अन्य युग हैं २७०० वर्षों का सप्तर्षि, ८१०० वर्षों का ध्रुव या क्रौञ्च, ५१०० वर्षों का बार्हस्पत्य युग, जिनकी व्याख्या आवश्यक नहीं है।

षड् विंशति सहस्राणि वर्षाणि मानुषाणि तु ।
वर्षाणां युगं ज्ञेयं दिव्यो ह्येष विधिः स्मृतः॥ (ब्रह्माण्ड पुराण,१/२/२९/१९)
खाभ्रखार्कै (१२०००) हृताः कल्पयाताः समाः शेषकं भागहारात् पृथक् पातयेत्।
यत्तयोरल्पकं तद् द्विशत्या (२००) भजेल्लिप्तिकाद्यं तत् त्रिभिः सायकैः (५)॥
पञ्च पञ्चभूमिः (१५) करा (२) भ्यां हतं भानुचन्द्रेज्यशुक्रेन्दुतुङ्गेष्वृणम्।
इन्दुना (१) दस्रबाणैः (५२) करा (२)भ्यां कृतभौमसौम्येन्दुपातार्किषु स्वं क्रमात्। (सिद्धान्त शिरोमणि, भूपरिधि-७,८)
स्वोपज्ञ भाष्य-अत्रोपलब्धिरेव वासना। यद्वर्ष सहस्रषट्कं यावुपचयस्ततोऽपचय इत्यत्रागम एव प्रमाणं नान्यत् कारणं वक्तुं शक्यत इत्यर्थः।
त्रिंशदधिकानि तु मे मतः सप्तर्षि वत्सरः॥ (ब्रह्माण्ड पुराण, १/२/२९/१६, वायुपुराण, ५७/१७)
सप्तविंशति पर्यन्ते कृत्स्ने नक्षत्र मण्डले । सप्तर्षयस्तु तिष्ठन्ते पर्यायेण शतं शतम्॥ (वायु पुराण, ९९/४१९)
स वै स्वायम्भुवः पूर्वं पुरुषो मनुरुच्यते। तस्यैकसप्तति युगं मन्वन्तरमिहोच्यते॥ (ब्रह्माण्ड पुराण,१/ २/९/३६,३७)
मत्स्य पुराण, अध्याय २७३ में भी कहा है कि स्वायम्भुव मनु के ४३ युग बाद वैवस्वत मनु हुये जिनके बाद २८ युग बीत चुके हैं -कलि आरम्भ (३१०२ ईसा पूर्व) तक जब सूत द्वारा पुराणों का प्रणयन हुआ-
अष्टाविंश समाख्याता गता वैवस्वतेऽन्तरे। एते देवगणैः सार्धं शिष्टा ये तान्निबोधत॥७७॥
चत्वारिंशत् त्रयश्चैव भवितास्ते महात्मनः (स्वायम्भुवः)। अवशिष्टा युगाख्यास्ते ततो वैवस्वतो ह्ययम् ॥७८॥
अभी ब्रह्माब्द का तीसरा दिन या २४००० वर्षों का तीसरा चक्र चल रहा है। त्रेता युगमुखे पूर्वमासन् स्वायम्भुवेऽन्तरे।
... ये वै ब्रजकुलाख्यास्तु आसन् स्वायम्भुवेऽन्तरे। कालेन बहुनातीतायनाब्द युगक्रमैः (वायु पुराण ३१/३, २९)
कल्पाख्ये श्वेत वाराहे ब्रह्माब्दस्य दिनत्रये । (भविष्य पुराण, प्रतिसर्ग १/१/३)
वेदों में भी देवों का काल ३ युग पूर्व कहा गया है-या ओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा।
(ऋग्वेद १०/९७/३, वाजसनेयि यजु १२/७५, तैत्तिरीय संहिता ४/२/६/१, निरुक्त ९/२८)
अन्तिम चक्र की अवसर्पिणी का द्वापर १७-२-३१०२ ईसापूर्व उज्जैन मध्यरात्रि को आरम्भ हुआ था।
इसके अनुसार युग-चक्र है-

चक्र	क्रम	ई.पू.वर्ष युग आरम्भ	हिम-चक्र (ग्लेसिअल)	टिप्पणी
अवरोही	६१,९०२	सत्य	शीत युग ६९२००	(पूर्व काल का त्रेता)
	५७,१०२	त्रेता	जलप्लावन ५८,१००	-मणिजा युग, च्युति गणना के अनुसार कई सूक्तों का काल
	५३,५०२	द्वापर		(पं. दीनानाथ शास्त्री चुलेट का वेद-काल-निर्णय, इन्दौर, १९२५)
अन्धयुग	५१,१०२	कलि		

(प्रथम) ४९,९०२ कलि
आरोही ४८,७०२ द्वापर
४६,३०२ त्रेता शीतयुग ४५,५००
४२,७०२ सत्य

३७,९०२ सत्य
अवरोही ३३,१०२ त्रेता जलप्लावन ३१,२००
२९,५०२ द्वापर आद्य त्रेता-ब्रह्मा (२९.१०२)-वराह कल्प
आद्य युग २७,१०२ कलि २७,३७६-ध्रुव निधन-०ध्रुव संवत्सर

(स्वायम्भुव) २५,९०२ कलि
द्वितीय २४,७०२ द्वापर (४३x३६०=१६०००)
आरोही २२,३०२ त्रेता शीतयुग २०,००० १८२७६- ध्रुव -१, क्रौञ्च प्रभुत्व
१८,७०२ सत्य

१३,९०२ सत्य १३९०२-वैवस्वत मनु
अवरोही ९,१०२ त्रेता जलप्लावन ९,२०० ११,१७६-ध्रुव-२, ८४७६-इक्ष्वाकु, सप्तर्षि-१
५,५०२ द्वापर २८x ३६०=१०,८०० ५,७७६-सप्तर्षि-२
वर्तमान ३१०२ कलि ३१०२-कलि ३०७६-लौकिक या सप्तर्षि-३

(वैवस्वत) १,९०२ कलि-इसके ठीक पूर्व महावीर जन्म ११-२-१९०५ ई.पू., ३१-३-१८८७ सिद्धार्थ बुद्ध जन्म
तृतीय ७०२ द्वापर ७५६-शूद्रक, ६१२-चाहमान, ४५६-श्रीहर्ष, ५७ विक्रम् संवत्
आरोही १,६९९ ई. त्रेता ७८ ई.-शालिवाहन सक, २८वां आन्ध्र राजा ३७६ ई.पू.-सप्तर्षि-१
५,२९९ ई. सत्य १७००-त्रेता सन्ध्या-औद्योगिक क्रान्ति, २०००-त्रेता-सूचना विज्ञान

५. बुद्धों का काल-(१) बुद्धवंश के अध्याय २७ में २८ बुद्धों की सूची में सिद्धार्थ तथा गौतम की गणना अलग-अलग की गयी है, पर उनको एक ही मानकर सिद्धार्थ को ज्ञान प्राप्ति के बाद गौतम बुद्ध माना जाता है। ज्ञान के बाद उनके बुद्ध होने का वर्णन है, पर गौतम बुद्ध होने का कहीं उल्लेख नहीं है। गौतम बुद्ध तथा उनके पूर्व के २७ बुद्धों के जीवन के बाद इसमें भविष्य के मैत्रेय बोधिसत्त्व का भी उल्लेख है। थेरावाद (स्थविर) मत के ३ मुख्य ग्रन्थों में सुत्त-पिटक (सूत्र या सूत-पुराण क्रम) है जिसके खुद्दक निकाय (क्षुद्रक = प्रकीर्ण) का एक अंश है बुद्धवंश। इसके अतिरिक्त गौतम बुद्ध ने पिछले कल्प के कई अन्य बुद्धों का भी उल्लेख किया है।

(२) सिद्धार्थ बुद्ध-महाभारत युद्ध (१६-१०-३१३९ ईसा पूर्व, कलि पूर्व ३७ की कार्त्तिक अमावस्या) को आरम्भ होने के ६८ दिन बाद २४-१२-३१३९ ईसा पूर्व को सूर्य का उत्तरायण आरम्भ होने पर भीष्म ने देह-त्याग किया था। उसके ५ दिन पूर्व १७-१२-३१३९ ईसा पूर्व को युधिष्ठिर का राज्याभिषेक हुआ था। इसी दिन से अबुल फजल ने अकबर के दीन-इलाही आरम्भ होने के वर्ष-मास-दिन की गणना की है। ३६ वर्ष शासन होने पर १७-२-३१०२ ईसा पूर्व में भगवान् कृष्ण का देहान्त होने पर कलियुग का आरम्भ हुआ। उसके ६ मास ११ दिन बाद परीक्षित का अभिषेक हुआ जिससे पुराणों में नन्द काल तक की गणना की गयी है। परीक्षित अभिषेक के ८९वें वर्ष प्लवंग सम्वत्सर की पौष अमावास्या (२७-११-३०१४ ईसा पूर्व) सोमवार दिन सूर्यग्रहण के अवसर पर जनमेजय ने सर्पयज्ञ के प्रायश्चित्त के लिये केदारनाथ तथा अन्य ४ क्षेत्रों में भूमिदान किया था, जो पट्टे अभी भी मान्य हैं। इसी महाभारत युद्ध में मारे गये सूर्यवंशी राजा बृहद्बल की २४ पीढ़ी बाद सिद्धार्थ का जन्म शुद्धोदन के पुत्र के रूप में हुआ। इनका उल्लेख सभी पुराणों में है। इनके जन्म की सभी मुख्य घटनायें वैशाख पूर्णिमा (बुद्ध पूर्णिमा) को हुयीं-

जन्म ३१-३-१८८६ ईसा पूर्व, शुक्रवार, वैशाख शुक्ल १५ (पूर्णिमा), ५९-२४ घटी तक। कपिलवस्तु के लिये प्रस्थान २९-५-१८५९ ईसा पूर्व, रविवार, आषाढ़ शुक्ल १५। बुद्धत्व प्राप्ति ३-४-१८५१ ईसा पूर्व, वैशाख पूर्णिमा सूर्योदय से ११ घटी पूर्व तक। शुद्धोदन का देहान्त २५-६-१८४८ ईसा पूर्व, शनिवार, श्रावण पूर्णिमा। बुद्ध निर्वाण २७-३-१८०७ ईसा पूर्व, मंगलवार, वैशाख पूर्णिमा, सूर्योदय से कुछ पूर्व। इनकी जन्म कुण्डली-लग्न ३-१°-२', सूर्य ०-४°-५४', चन्द्र ६-२८°-६', मंगल ११-२८°-२४', बुध ११-१०°-३०', गुरु ५-८°-१२', शुक्र ०-२३°-२४', शनि १-१६°-४८', राहु २-१५°-३८', केतु ८-१५°-३८'। ये सभी तिथि-नक्षत्र-वार बुद्ध की जीवनी से हैं।

(३) गौतम बुद्ध-सामान्यतः ४८३ ईसा पूर्व में जिस बुद्ध का निर्वाण कहा जाता है, वह यही बुद्ध हैं जिनका काल कलि की २७ वीं शताब्दी (५०० ईसा पूर्व से आरम्भ) है। इन्होंने गौतम के न्याय दर्शन के तर्क द्वारा अन्य मतों का खण्डन किया तथा वैदिक मार्ग के उन्मूलन के लिये तीर्थों में यन्त्र स्थापित किये। गौतम मार्ग के कारण इनको गौतम बुद्ध कहा गया, जो इनका मूल नाम भी हो सकता है। स्वयं सिद्धार्थ बुद्ध ने कहा था कि उनका मार्ग १००० वर्षों तक चलेगा पर मठों में स्त्रियों के प्रवेश के बाद कहा कि यह ५०० वर्षों तक ही चलेगा। आज की धार्मिक संस्थाओं में भ्रष्टाचार उनकी नजर में था। गौतम बुद्ध के काल में मुख्य धारा से द्वेष के कारण तथा सिद्धार्थ द्वारा दृष्ट दुराचारों के कारण इसका प्रचार शंकराचार्य (५०९-४७६ ईसा पूर्व) में कम हो गया। चीन में भी इसी काल में कन्फ्युशस तथा लाओत्से ने सुधार किये।

भविष्य पुराण, प्रतिसर्ग पर्व ४, अध्याय २१-

सप्तविंशच्छते भूमौ कलौ सम्वत्सरे गते॥२९॥ शाक्यसिंह गुरुर्गेयो बहु माया प्रवर्तकः॥३०॥

स नाम्ना गौतमाचार्यो दैत्य पक्षविवर्धकः। सर्वतीर्थेषु तेनैव यन्त्राणि स्थापितानि वै॥ ३१॥

(४) विष्णु अवतार बुद्ध २००० कलि के कुछ बाद मगध (कीकट) में अजिन ब्राह्मण के पुत्र रूप में उत्पन्न हुये। दैत्यों का विनाश इन्होंने ही किया, सिद्धार्थ तथा गौतम मुख्यतः वेद मार्ग के विनाश में तत्पर थे। इसका मुख्य कारण था प्रायः ८०० ईसा पूर्व में असीरिया में असुर बनिपाल के नेतृत्व में असुर शक्ति का उदय। उसके प्रतिकार के लिये आबू पर्वत पर यज्ञ कर ४ शक्तिशाली राजाओं का संघ बना। ये राजा देश-रक्षा में अग्रणी या अग्री होने के कारण अग्निवंशी कहे गये-प्रमर (परमार-सामवेदी ब्राह्मण), प्रतिहार (परिहार), चाहमान (चौहान), चालुक्य (शुक्ल यजुर्वेदी, सोलंकी, सालुंखे)। इस संघ के नेता होने के कारण ब्राह्मण इन्द्राणीगुप्त को सम्मान के लिये शूद्रक (४ वर्णों या राआओं का समन्वय) कहा गया तथा इस समय आरम्भ मालव-गण-सम्वत् (७५६ ईसा पूर्व) को कृत-सम्वत् कहा गया। ६१२ ईसा पूर्व में इस संघ के चाहमान ने असीरिया की राजधानी निनेवे को पूरी तरह ध्वस्त कर दिया, जिसका उल्लेख बाइबिल में कई स्थानों पर है। http://bible.tmtm.com/wiki/NINEVEH_%28Jewish_Encyclopedia%29

http://www.biblewiki.be/wiki/Medes

चाहमान को मध्यदेश (मेडेस) का राजा कहा गया है। विन्ध्य तथा हिमालय के बीच का भाग अभी भी मधेस कहा जाता है-नेपाल में मैदानी भाग के लोगों को मधेस कहते हैं। रघुवंश (२/४२) में भी अयोध्या के राजा दिलीप को मध्यम-लोक-पाल कहा गया है। इस दिन चाहमान या शाकम्भरी शक आरम्भ हुआ, जिसका प्रयोग वराहमिहिर (बृहत् संहिता १३/३) तथा ब्रह्मगुप्त ने किया है। कलियुग के ८वें पाण्डुवंशी राजा निचक्षु के काल में जब सरस्वती नदी सूख गयी तथा हस्तिनापुर डूब गया, तो शाकम्भरी अवतार हुआ था (दुर्गा सप्तशती, अध्याय ११) जिसमें चपहानि या चाहमान वंश की मुख्य भूमिका थी।

व्यतीते द्विसहस्राब्दे किञ्चिज्जाते भृगूत्तम॥१९॥अग्निद्वारेण प्रययौ स शुक्लोऽर्बुद पर्वते।

जित्वा बौद्धान् द्विजैः सार्धं त्रिभिरन्यैश्च बन्धुभिः॥२०॥(भविष्य पुराण, प्रतिसर्ग पर्व, ३/३)

बौद्धरूपः स्वयं जातः कलौ प्राप्ते भयानके। अजिनस्य द्विजस्यैव सुतो भूत्वा जनार्दनः॥२७॥

वेद धर्म परान् विप्रान् मोहयामास वीर्यवान्।॥२८॥

षोडषे च कलौ प्राप्ते बभूवुर्यज्ञवर्जिताः॥२९॥(भविष्य पुराण, प्रतिसर्ग पर्व, ४/१२)

ततः कलौ सम्प्रवृत्ते सम्मोहाय सुरद्विषाम्।

बुद्धो नाम्नाजिनसुतः कीकटेषु भविष्यति॥ (भागवत पुराण १/३/२४)
वराहमिहिर-बृहत् संहिता (१३/३)-
आसन् मघासु मुनयः शासति पृथ्वीं युधिष्ठिरे नृपतौ। षड्-द्विक-पञ्च-द्वि (२५२६) युतः शककालस्तस्य राज्ञस्य॥
ब्राह्मस्फुटसिद्धान्त (२४/७-८)
श्रीचापवंशतिलके श्रीव्याघ्रमुखे नृपे शकनृपाणाम्। पञ्चाशत् संयुक्तैर्वर्षशतैः पञ्चभिरतीतैः॥
ब्राह्मः स्फुटसिद्धान्तः सज्जनगणितज्ञगोलवित् प्रीत्यै। त्रिंशद्वर्षेन कृतो जिष्णुसुतब्रह्मगुप्तेन॥
भविष्य पुराण, प्रतिसर्ग पर्व (१/६)-
एतस्मिन्नेवकाले तु कान्यकुब्जो द्विजोत्तमः। अर्बुदं शिखरं प्राप्य ब्रह्महोममथाकरोत्॥४५॥
वेदमन्त्रप्रभावाच्च जाताश्चत्वारि क्षत्रियाः। प्रमरस्सामवेदी च चपहानिर्यजुर्विदः॥४६॥
त्रिवेदी च तथा शुक्लोऽथर्वा स परिहारकः॥४७॥ अवन्ते प्रमरो भूपश्चतुर्योजन विस्तृता।।४९॥
प्रतिसर्ग (१/७)-चित्रकूटगिरिर्देशे परिहारो महीपतिः। कालिंजर पुरं रम्यमक्रोशायतनं स्मृतम्॥१॥
राजपुत्राख्यदेशे च चपहानिर्महीपतिः॥२॥ अजमेरपुरं रम्यं विधिशोभा समन्वितम्॥३॥
शुक्लो नाम महीपालो गत आनर्तमण्डले। द्वारकां नाम नगरीमध्यास्य सुखिनोऽभवत्॥४॥
प्राचीन काल में भी इन्द्र के ३ लोकों में मुख्य भारत था, जिसका अग्री (अग्रणी) अग्नि कहा जाता था। यह पूरे विश्व को अन्न देता था अतः उसे भरत कहते थे तथा देश को भारत । इसी अग्री को आजकल अग्रसेन कहते हैं जिनको अग्रवाल अपना पूर्वज कहते हैं।
तद् वा एनं एतद् अग्रे देवानां (प्रजापतिः) अजनत। तस्माद् अग्निः ह वै नाम एतद् अग्निः इति। (शतपथ ब्राह्मण २/२/४/२) स यद् अस्य सर्वस्य अग्रं असृज्यत तस्माद् अग्निः, अग्निः ह वै तं अग्निः इति आचक्षते परोऽक्षम्। (शतपथ ब्राह्मण ६/१/१/११)
तस्मा अग्निर्भारतः शर्म यं सज्ज्योक् पश्यात् सूर्यमुच्चरन्तम् ।
य इन्द्राय सुनवामेत्याह नरे नर्य्याय नृतमाय नृणाम् । (ऋक् संहिता, ४/४/२५)
अग्निर्वै भरतः । स वै देवेभ्यो हव्यं भरति (कौषीतकि ब्राह्मण उपनिषद्, ३/२)
अग्नेर्महाँ ब्राह्मण भारतेति । एष हि देवेभ्य हव्यं भरति । (तैत्तिरीय संहिता, २/५/९/१, तैत्तिरीय ब्राह्मण, ३/५/३/१, शतपथ ब्राह्मण, १/१/४/१)
विश्व भरण पोषण कर जोई । ताकर नाम भरत आस होई। तुलसीदास कृत राम चरित मानस), बालकाण्ड (
(५) मौर्य अशोक (१४७२-१४३६ ईसा पूर्व) के निगलिहवा (सारनाथ के निकट) शिलालेख में ४ बुद्धों का नाम है। इनके जन्मस्थानों का विवरण चीनी यात्री फाहियान ने दिया है। सिद्धार्थ के अतिरिक्त क्रकुच्छन्द (श्रावस्ती से १०० कि.मी. दक्षिण पश्चिम), कनकमुनि या कोणगमन (श्रावस्ती से ८ कि.मी. उत्तर), कश्यप बुद्ध (श्रावस्ती से १५ कि.मी. पश्चिम) हुये थे। यह प्रथम कश्यप के बाद के हैं। फाहियान ने सिद्धार्थ बुद्ध के निर्वाण के ३०० वर्ष बाद अर्थात् १५०७ ईसा पूर्व में धान्यकटक में मैत्रेय बुद्ध का जन्म लिखा है।। श्री वासुदेव मिरासी ने धान्य कटक, कालिदास आदि सभी का स्थान अपने घर नागपुर में कर दिया है। ब्रिटिश काल में यह बीमारी हुई कि सभी को अपने घर में ही प्रमाणित किया जाय। वीरेन्द्र गुप्त ने पाटलिपुत्र (पटना) की बृहद्-हट्टी (बड़ा बाजार) पटना से १२०० कि.मी. दूर अपने घर मेरठ जिले का बारहट कर दिया है, सुनीति कुमार चटर्जी ने विद्यापति, जयदेव आदि सभी को बंगाल में डाल दिया है। धान्य कटक वर्तमान कटक नगर है जो धान्य का उत्पादक तथा निर्यातक (बिहार, बंगाल आदि क्षेत्रों से भी) रहा है। अतः यहां धानमण्डल, सालेपुर (शालि = धान), चाउलिआगंज, आदि अभी भी हैं। उत्तर ओडिशा को उड्र कहते थे क्योंकि यहां समुद्र की कम गहराई के कारण काठ की नौका (उडुप) का प्रयोग होता था। अंग्रेजी में भी qood = काठ, woods = जंगल। इसी अर्थ में मंगलोर का तट उडुपी कहा जाता है। उड्र से निर्यात होने वाला चावल औड्र कहते थे, जो ग्रीक में ओराइजा (Oryza) हो गया। आज भी चावल का वैज्ञानिक नाम ओराइइजा इण्डिका है। यह ओड़िशा नाम का मूल है। ओ लुप्त होने से धान का नाम राइस हो गया। इस क्षेत्र में आज भी बुद्ध के जन्म स्थान के रूप में

प्रसिद्ध ललितगिरि की गुफायें, मठ आदि हैं। मैत्रेय का अर्थ सूर्य क्षेत्र है जो निकट के कोणार्क में है। मैत्रेय बुद्ध ने माध्यमिक दर्शन का उपदेश किया जिसकी व्याख्या नागार्जुन ने की।

(६) चीन में कम से कम २ बुद्धों का जन्म हुआ था। प्रथम बुद्ध को चीन में फान या मन्जुश्री बुद्ध कहा गया है जिन्होंने हर वस्तु का नाम तथा चिह्न दिया। आज भी चीन में प्रत्येक शब्द के लिये अलग अलग चिह्न हैं। वेद के अनुसार यह व्यवस्था बृहस्पति ने की थी। शतपथ ब्राह्मण (१/२/३/२२-२६) के अनुसार इन्द्र ने उनको मनुष्य लोक (भारत) में भेजा था। उन्होंने यज्ञ विरोधी लोगों को पहले उल्टा उपदेश दिया जिससे वे यज्ञ के महत्त्व को समझें। इसको शब्द-पारायण कहा गया। शुक्राचार्य ने इसकी निन्दा करते हुये मारणान्तक-व्याधि कहा क्योंकि पूरे जीवन में भी कोई यह लिपि नहीं सीख सकता। तब इन्द्र ने शब्द विद्या के आचार्य मरुत् की सहायता से शब्दों को वर्ण तथा अक्षरों में व्याकृत (अलग-अलग) किया जिसे व्याकरण कहा गया। भारत में ब्रह्मा द्वारा वस्तुओं के नाम देने का वर्णन है। मनुष्य रूप में ७ ब्रह्मा का वर्णन महाभारत शान्तिपर्व अध्याय ३४८-३४९ में है। बाइबिल में आदम द्वारा नाम देने का वर्णन है।

इयं या परमेष्ठिनी वाग्देवी ब्रह्म संशिता। यथैव ससृजे घोरं तथैव शान्तिरस्तु नः॥ (अथर्व संहिता १९/९/३)

वाचं देवा उपजीवन्ति विश्वे वाचं गन्धर्वा पशवो मनुष्याः।

वाचीमा विश्वा भुवनानि अर्पिता सा नो हवं जुषताम् इन्द्र पत्नी॥ (तैत्तिरीय ब्राह्मण २/८/८/४)

= इन्द्र द्वारा लिपि का निर्माण होने से उसे इन्द्रपत्नी कहा गया तथा इन्द्र का नाम लेखर्षभ हुआ।

बृहस्पते प्रथमं वाचो अग्रं यत् प्रैरत् नामधेयं दधानाः।

यदेषां श्रेष्ठं यदरि प्रमासीत् प्रेणा तदेषां निहितं गुहाविः॥ (ऋक् १०/७१/१)

बृहस्पतिरिन्द्राय दिव्यवर्ष सहस्रं प्रतिपदोक्तानां शब्दपारायणं प्रोवाच। (पतञ्जलि-व्याकरण महाभाष्य १/१/१)

तथा च बृहस्पतिः-प्रतिपदम् अशक्यत्त्वात् लक्षणस्यापि अव्यवस्थितत्वात् तत्रापि स्खलित दर्शनात् अनवस्था प्रसंगाच्च मरणान्तो व्याधिः व्याकरणमिति औशनसा इत्। (न्याय मञ्जरी, पृष्ठ ४१८)

वाग् वै पराची अव्याकृता अवदत्। ते देवा इन्द्रम् अब्रुवन्-इमां नो वाचं व्याकुरुत-इति। ... तामिन्द्रो मध्यत अपक्रम्य व्याकरोत्। तस्मादिदं व्याकृता वाग् उद्यते इति। (तैत्तिरीय संहिता ६/४/७)

सायण भाष्य-तामखण्डां वाचं मध्ये विच्छिन्न प्रकृति-प्रत्यय विभागं सर्वत्र अकरोत्।

स (इन्द्रो) वाचैव व्यवर्तयद्। (मैत्रायणी संहिता ४/५/८)

शतपथ ब्राह्मण (काण्ड १, प्रपाठक २, ब्राह्मण ३, मन्त्र २२-२६) के अनुसार इन्द्र ने उनको मनुष्य लोक (भारत) में भेजा था। उन्होंने यज्ञ विरोधी लोगों को पहले उल्टा उपदेश दिया जिससे वे यज्ञ के महत्त्व को समझें।

चीन के दूसरे बुद्ध को वहां अमिताभ बुद्ध कहा गया है। इन्होंने रावण को जो उपदेश दिया था वह लङ्कावतार सूत्र है। राम के समय यही प्रचलित था जिसका उल्लेख अयोध्या काण्ड अध्याय १०८-१०९ में जाबालि ने किया। व्यक्तिगत लाभ के लिये बुद्धि के प्रयोग की राम ने १०९/३४ में निन्दा करते हुये बुद्ध, बुध, तथागत या शक्यमान को चोर कहा है (ऊपर उद्धृत)। अमिताभ बुद्ध को भारत में काकभुशुण्डि कहा गया है जिनके नाम से एक रामायण भी है। योगवासिष्ठ रामायण, निर्वाण काण्ड, भाग १ के अध्यायों १४-१७ में इनका वर्णन है कि इनका स्थान मेरु (प्राङ्-मेरु = पामीर) के उत्तर पूर्व अर्थात् चीन में है। गरुड़ (किर्गिज देश, किरीगी - पक्षी) उनसे शिक्षा लेने के लिये उत्तर पूर्व गये थे। ललिता सहस्रनाम के श्लोक १०३ में २०१ नाम सद्गतिप्रदा है, जिसकी व्याख्या में सोमानन्द ने लिखा है कि वसिष्ठ ज्ञान प्राप्ति के लिये काकभुशुण्डि के पास गये थे, उसके बाद ललिता भक्ति से उनकी सद्गति हुई।

(७) सुमेधा बुद्ध-यह दुर्गा सप्तशती के सुमेधा ऋषि हैं। रामायण बालकाण्ड के अनुसार धनुष यज्ञ के बाद परशुराम ने शार्ङ्ग धनुष राम को दे दिया तथा उसके बाद वे तपस्या के लिये महेन्द्र पर्वत पर गये। ओडिशा के राजाओं को महेन्द्र राज कहा जाता था तथा यहां का सबसे ऊंचा पर्वत महेन्द्र गिरि (कन्धमाल जिला) है। यहां सुमेधा ने परशुराम को दीक्षा तथा उपदेश दिया था जिसका विस्तृत वर्णन त्रिपुरा रहस्य है जिसके २ विशाल खण्ड ज्ञान तथा माहात्म्य प्रायः ४००० पृष्ठों में उपलब्ध हैं। परशुराम के निधन पर ६१७७ ईसा पूर्व में कलम्ब (कोल्लम्) सम्वत् आरम्भ हुआ जो

केरल में अभी भी चल रहा है। सुमेधा ने शक्ति के रूपों की १० महाविद्या के रूप में व्याख्या की जिनको बौद्ध ग्रन्थों में १० प्रज्ञा-पारमिता कहा गया है। महाविद्या या प्रज्ञा-पारमिता-दोनों का अर्थ है विद्या की सीमा। इनका स्थान आज भी बौध कहा जाता है (एक जिला)।

(८) दीपंकर बुद्ध-इन्होंने राजा सुचन्द्र को वज्र-योग का उपदेश दिया था। यह मार्ग वज्रयान कहा जाता है जिसमें उच्च कोटि की योग साधना की जाती है। इनके बुद्ध-तन्त्र का प्रचार हेवज्र ने किया तथा उस परम्परा में पद्म (सरोरुह) , वज्र, आनन्द-वज्र, अनङ्ग-वज्र हुये। अनङ्ग-वज्र का शिष्य ओडिशा का राजा इन्द्रभूति था जिसकी बहन लक्ष्मीङ्करा ने उनकी शिक्षा को गीतों के रूप में प्रचलित किया जिनको बंगाल में बाउल गीत कहा जाता है। इन्द्रभूति के पुत्र पद्मसम्भव ने तिब्बत में लामा परम्परा का आरम्भ किया। बौद्ध साधना शाक्त मत है जो ३६ तत्त्वों के शैव-दर्शन पर आधारित है। अतः इसके लिये ३६ अक्षरों की लिपि का प्रयोग होता था जो आज अरबी या लैटिन, रूसी है। बौद्ध विद्यालयों में सहपाठी को अबुस कहते थे जो प्रथम ३ वर्णों अ,ब, ज़ (a, b, c) का मिलन है। कम स्तर के व्यक्ति को केवल २ वर्णों से सम्बोधित किया जाता है-अबे (अलिफ + बे) जो तिरस्कार सूचक है। संख्या रूप में अबज़द् आदि १,२,-९ तक को सूचित करते थे। दहाई के अंक कलमन आदि से होते थे (k, l, m, n)। अतः कलाम का अर्थ गुरु, कलम = लेखनी, कलीम = विद्वान् आदि है। इसी प्रकार साधना करने वाले को अल्लामा कहा जाता है जो अ से ल तक (संस्कृत में अलम्) का ज्ञान रखता है। इसे ही लामा कहते हैं। लामा लोगों का प्रधान दलई-लामा है। दलई या दलवाइ ओडिशा, महाराष्ट्र, कर्णाटक में प्रचलित है।

(१०) शाक्यसिंह बुद्ध-यह महाभारत काल में नेपाल के किरात राजा जितेदस्ती के काल में गये थे (कोटा वेङ्कटाचलम की नेपाल वंशावली)। यह राजा महाभारत युद्ध में मारा गया था। इसके पिता हुमति के काल में पाण्डव अर्जुन नेपाल गये थे जिनके साथ किरात युद्ध तथा बाद में मित्रता की कहानी महाभारत, वन पर्व के कैरात पर्व, अध्याय ३८-४४ में वर्णित है तथा इस पर दण्डी का किरातार्जुनीयम् महाकाव्य है। सिद्धार्थ को भी शाक्यमुनि इसलिये कहते थे क्योंकि उनका वंश साल (शक = सखुआ) वन के क्षेत्र में राज्य करता था। शाक्यसिंह भी इसी या निकटवर्त्ती अन्य शाक्यवंश के होंगे। इनकी शिक्षा महाभारत, शान्ति पर्व अध्याय ३०७-३०८ में है।

(११) कश्यप-यह देवों तथा दैत्यों दोनों के गुरु थे तथा इनको ब्रह्मा भी कहा गया है। इनके काल के बाद १० युगों = ३६०० वर्ष तक दैत्यों का प्रभुत्व रहा जिसके बाद वैवस्वत मनु का काल (१३९०२ ईसा पूर्व) आरम्भ हुआ। अतः इनका काल १७,५०२ ईसा पूर्व है। इनका स्थान कैस्पियन सागर (झील) के निकट था जो इनके ही नाम पर है। इनकी शिक्षा का वर्णन महाभारत, शान्ति पर्व अध्याय १२४ के प्रह्लाद-इन्द्र संवाद में है। कश्यप को आयुर्वेद का भी आचार्य कहा गया है, जिनके नाम पर गद-तन्त्र (विष विज्ञान) है। यह हो सकता है कि इनका जन्म स्थान श्रावस्ती के पास रहा हो जिसका उल्लेख फाहियान ने किया है तथा उस काल में भारत में ज्ञात था। बुद्ध के काल में भी पूरण कश्यप थे जिनके मत का सिद्धार्थ ने उच्छेद किया। पूरण को गणित के ४ प्रवर्त्तकों में एक कहा गया है (आर्यभटीय पर भास्कर टीका) बौद्ध लोगों ने शाब्दिक तर्क के समर्थन में गणित का तथा अहिंसा के नाम पर शल्य चिकित्सा का विरोध किया। पर बौद्ध मठों मे नित्य मांस बनता था जिसका विरोध करने के कारण देवदत्त को संघ से निकाल दिया गया था। स्वयं सिद्धार्थ के पेट की शल्य चिकित्सा पाटलिपुत्र के जीवक वैद्य ने की थी क्योंकि अधिक मासाहार के कारण स्वास्थ्य खराब हो गया था। मांसाहार के ही कारण सारनाथ में उनकी मृत्यु हुई। इन बातों में सिद्धान्त के बदले लोकप्रियता की राजनीति है। पूरण कश्यप का स्थान बिहार के रोहतास जिले में कसाप है।

(१२) लोकधातु बुद्ध-राजतरंगिणी के अनुसार यह गोनन्द वंश के ४८ वें राजा अशोक (१४४८-१४०० ईसा पूर्व) के समय थे। इनके द्वारा बौद्ध मत के प्रचार के कारण मध्य एसिआ बौद्ध घुस गये तथा उन्होंने कश्मीर का राज्य नष्ट कर दिया। राजतरंगिणी के इस श्लोक (१/१०१-१०२) के आधार पर मद्रास के अभिलेख अधिकारी हुल्ज ने कहानी गढ़ी कि मौर्य अशोक (कश्मीर अशोक नहीं) के बौद्ध धर्म ग्रहण करने के कारण राज्य नष्ट हो गया। ५१वें गोनन्द राजा कनिष्क (१२६४-१२३४ ईसा पूर्व) के काल में भी एक लोकधातु बुद्ध थे।

(१३) अन्य बुद्ध- स्वयं सिद्धार्थ बुद्ध ने कहा है कि उनके पूर्व ७ बुद्ध हुये थे जिनमें केवल ३ की शिक्षा उपलब्ध थी क्योंकि वह लिखित रूप में थी-कनकमुनि क्रकुच्छन्द, कश्यप। अन्य ४ के उपदेश लिखित रूप में नहीं रहने के कारण लुप्त हो गये-विपश्यी, शिखि, विश्वभू, तिष्य (पुष्य, कलियुग)। इसके अतिरिक्त नारद को भी एक बुद्ध माना गया है। पुराणों मे नारद के ३ जन्मों का विवरण मिलता है, जिनमें वह संगीत (गान्धर्व विद्या), ज्योतिष तथा भक्ति के आचार्य थे। इनकी सभी शिक्षाओं का सारांश नारद पुराण में उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त कार्त्तिकेय की गणना बोधिसत्व के रूप में है। यह बलि-इन्द्र युद्ध के समय देवताओं के सेनापति थे। इन्होंने शक्ति पाने के लिये घोर तपस्या की थी। वामन को दान के रूप में बलि ने जब इन्द्र को ३ लोक वापस कर दिये तो कई असुर असन्तुष्ट थे कि देव्ता उनसे युद्ध में नही जीत सकते थे। अतः छिटपुट युद्ध चलता रहा। कूर्म के अनुरोध पर मिलित रूप से समुद्र-मन्थन हुआ, जो खनिज सम्पत्ति का दोहन था। कुछ समय के लिये युद्ध बन्द हुआ, फिर उसके बंटवारे के लिये युद्ध हुआ। कार्त्तिकेय ने क्रौञ्च द्वीप (उत्तर अमेरिका क्रौञ्च पक्षी के आकार का है) पर शक्ति (मिसाइल) द्वारा प्रहार किया जिससे क्रौञ्च पर्वत नष्ट हो गया। (रौकी पर्वतमाला-यह भी क्रौञ्च पक्षी के ही आकार का है)। उसके बाद उनकी सेना मयूर (जल-स्थल-वायु में चलने वाला) ने आक्रमण किया। आज भी उन मयूरों के वंशज माओरी जाति तथा भाषा के साथ पूरे प्रशान्त महासागर में हवाई से न्यूजीलैण्ड तक फैले हैं। कार्त्तिकेय के समय उत्तरी ध्रुव की दिशा अभिजित् नक्षत्र से दूर हट गय़ी थी जिसे महाभारत, वन पर्व अध्याय २३०/८-१० में अभिजित् का पतन कहा गया है। तब इन्द्र के आदेश पर अभिजित् के बदले धनिष्ठा नक्षत्र से वर्ष का आरम्भ हुआ। १५८०० ईसा पूर्व में हुआ था। उस समय वर्षा से ही सम्वत्सर का आरम्भ होता था अतः इसे वर्ष कहा गया।

६. बुद्धों की सूची-२८ बुद्धों के नाम हैं- (१) तनहंकर, (२) मेधांकर, (३) शरणंकर, (४) दीपंकर, (५) कोण्डन्ना, (६) मंगल, (७) सुमना, (८) रेवत, (९) शोभित, (१०) अनोमदर्शी, (११) पद्म, (१२) नारद, (१३) पद्मोत्तर, (१४) सुमेधा, (१५) सुजाता, (१६) प्रियदर्शी, (१७) अन्तः दर्शी, (१८) धर्मदर्शी, (१९) सिद्धार्थ, (२०) तिष्य, (२१) पुष्य, (२२) विपश्यी, (२३) शिखी, (२४) विश्वभू, (२५) क्रकुच्छन्द, (२६) कनकमुनि, (२७) कश्यप, (२८) गौतम, (२९) मैत्रेय (भविष्य में)

बोधिसत्त्व-यह बुद्धत्व प्राप्ति के निकट पूर्व की अवस्था है। चीनी, जापानी तथा तिब्बती ग्रन्थों क्के आधार पर इनकी सूची है-

(१) आकाशगर्भ-आनन्द रूप जो सभी की सहायता करते हैं।

(२) अवलोकितेश्वर-कृपामूर्ति, महायान मार्ग के मुख्य बोधिसत्त्व।

(३) क्षितिगर्भ-नारकीय जीवों के लिये, दृढप्रतिज्ञ।

(४) महास्थानप्राप्त-बौद्धिक शक्ति, अमिताभ की बाईं तरफ स्थान।

(५) मैत्रेय-गौतम बुद्ध के बाद करुणामूर्ति के रूप में जन्म।

(६) मञ्जुश्री-प्रज्ञा तथा बुद्धि रूप में।

(७) नागार्जुन-महायान मार्ग की माध्यमक शाखा के संस्थापक।

(८) वज्रपाणि-बुद्ध के अंगरक्षक।

(९) पद्मसम्भव-तिब्बत के रिनपोछे।

(१०) समन्तभद्र-सभी बौद्धों की साधना तथा ध्यान रूप।

(११) संघाराम-बौद्ध मठों के रक्षक।

(१२) शान्तिदेव-बौद्ध विद्वान् जिन्होंने बोधिसत्वों के विषय में लिखा।

(१३) सितातपत्र-श्वेत वस्त्रधारी, अदृश्य विपत्तियों से रक्षा करने वाले।

(१४) स्कन्द-धर्मरक्षक, वज्रपाणि (इन्द्र) के सहायक।

(१५) सुपुष्पचन्द्र-शान्तिदेव की पुस्तक में लिखित।

(१६) सूर्यवैरोचन-भैषज्य गुरु बुद्ध के २ सहायकों में एक।

(१७) तारा-अवलोकितेश्वर का नारी रूप, तिब्बत में कार्यसिद्धि की देवी, चिकित्सा की देवी।

(१८) वज्रपाणि-महायान के प्राचीन बोधिसत्व।

(१९) वसुधर-सम्पत्ति तथा उत्पादन कारक, नेपाल में प्रचलित।